

जिंदगी की आस ने लाचार बना दिया,
प्यार के अहसास ने बेजार बना दिया,
आदमी तो बहुत काम के थे हम भी,
पर मौत की तलाश ने बेकार बना दिया।

जमाने ने करी मेरी नीलामी, इस नीलामी में विश्वास ढूँढता हूँ।
हजार हुई जब चुभे, तो उसमें परिहास ढूँढता हूँ।
रातों को साथ में, लगा कालीख हाथ में,
बांह पसारे मौत में अब प्रकाश ढूँढता हूँ।

लबों पर हंसी रखकर भुलाना इतिहास चाहता हूँ,
खुद को मार डालने को, मैं कारावास चाहता हूँ।
प्यार बहुत किया था अब तो नफरत की बारी थी,
लंबी रात सी उस मौत में बनवास चाहता हूँ।

सपनों को मार के सपने पूरे चाहता हूँ,
भरी हुई इस दुनिया में लोग अधूरे चाहता हूँ।
लंबी झूठी जुमलों को भी सच मानने लगा हूँ अब,
उन झूठों को सच करने के राह बटेरे चाहता हूँ।

तपती हुई उस गर्मी का एहसास चाहता हूँ,
जो गंगा से बिना बुछे, वह प्यास चाहता हूँ।
जिंदगी तो मैंने भी बहुत जी ली है,
पर अब मैं इस जीवन का आभास चाहता हूँ।

जो खाना आज काम बन गया है उसमें फिर से स्वाद चाहता हूँ,
जिससे कभी मन ना भरे वैसी मुराद चाहता हूँ,
थक गया हूँ दौड़ते भागते इस दुनिया में मैं,
मुकम्मल सी इस दुनिया में, मैं खुद को बर्बाद चाहता हूँ।

-बिधान आर्य